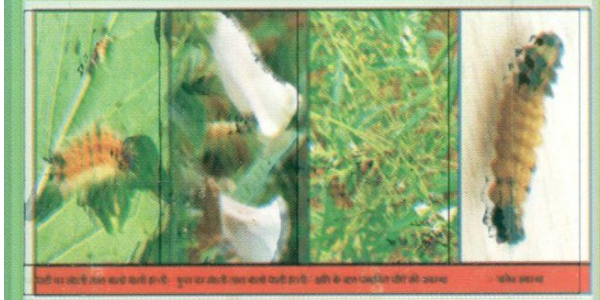

क्षति के लक्षण:

इसकी इल्लियां पत्तियों से हरे भाग को खुरचकर खाती हैं। इसके कारण प्रभावित पत्तियों पर केवल शिरायें ही दिखाई देती हैं अर्थात पत्तियां जालीनुमा दिखाई देती हैं। ये इल्लियां एक पौधे से दूसरे पौधे और एक खेत से दूसरे खेत में चली जाती हैं।

फूल खाने वाली भृंग:

बुंदेलखंड क्षेत्र में तिल की फसल पर दो तरह की भृंग का आक्रमण देखा जाता है। एक तो काले शरीर पर लाल धारी या धब्बे वाली भृंग जो कि बलिस्टर बीटल के नाम से जानी जाती है और दूसरी लाल पंखो पर सफेद धब्बों वाली भृंग, फूल बीटल के नाम से जानी जाती है। बलिस्टर बीटल सम्पूर्ण फूल को खाकर नष्ट करती है जबकि फूल बीटल फूल के नर भाग को खाकर नष्ट करती है। दोनों ही वयस्क अवस्था में नुकसान पहुंचाती हैं। लेकिन इनकी इल्लियां (ग्रब) मिट्टी में रहकर पौधे या अन्य फसलो के अवशेषो को खाकर मिट्टी में मिला देती हैं। ये सुबह और शाम के समय अधिक नुकसान पहुंचाती हैं। अधिक क्षति होने पर प्रभावित पौधा फलियाँ नहीं बना पाता है। जिसके कारण किसान को अधिक हानि उठानी पड़ जाती है।

रस चूसने वाले कीड़े:

शिशु और वयस्क दोनों ही अवस्थाएं फलियों से रस चूसकर नुकसान पहुंचाते है। इनकी मादाये फलियों पर समूह में अंडे देती है। अंडो से छोटे शिशु बाहर आते है और फलियों से रस चूसना आरम्भ करते है। शुरुआत में ये समूह में रहते हैं लेकिन बाद में ये फसल के दूसरे पौधों पर फैल जाते हैं। ये अपने मुखांगों को फलियों में चुभाकर रस चूसते हैं। बाद में उसी भाग पर फफूंदी के आक्रमण के कारण फलियाँ काली पड़ जाती हैं। फलियों में रस न होने के कारण बीज नहीं बनते।

तिल में एकीकृत कीट प्रबंधन:

फसल बुवाई से पहले खेत की एक गहरी जुताई अवश्य करें। इल्लियों को जाले से निकाल कर नष्ट कर दें। इनके शिकारी पक्षियों के लिए दो मीटर लम्बाई के डंडे के एक सिरे पर एक दूसरा डंडा इस तरह से बांधें की वह अंग्रेजी के 'T' के आकार का दिखाई दे। फसल वाले खेत में 40 से 50 प्रति हेक्टेयर की दर से लगा दें। एक हेक्टेयर खेत पर एक बिजली के बल्ब का प्रयोग इसके वयस्कों को आकर्षित करने के लिए करें और जिसके नीचे पानी से भरे बड़े बर्तन का प्रयोग करे। फलियों से रस चूसने वाले कीड़ो से बचाव के लिए इमिड़ाक्लोपीड 70 डब्लू. एस. की 7.5 ग्राम मात्रा से प्रति किलोग्राम बीज को उपचारित करे रसायन उपचार के लिए नीम के बीजों के तेल का 5 प्रतिशत का घोल बनाकर छिड़काव करें या स्पाईनोसेड 45 एस.सी. की 0.2 मिलीलीटर या क्यूनोलफॉस 25 ई.सी. की 2 मिलीलीटर मात्रा को प्रति लीटर पानी में मात्रा को मिलाकर छिड़काव करें।

विशेष जानकारी हेतु संपर्क करें-

डॉ. एस. एस. सिंह

निदेशक प्रसार शिक्षा

प्रसार शिक्षा निदेशालय

दूरभाष : 789746699

ई-मेल : directorextension.rlbcau@gmail.com

प्रकाशित:

कुलपति

रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय

झाँसी (उ.प्र.) 284003

प्र.शि.नि./त.प्र.सा.-फोल्डर/2021/23

तिल की फसल के प्रमुख कीट एवं उनकी रोकथाम

सुन्दर पाल

सुशील कुमार चतुर्वेदी

प्रसार शिक्षा निदेशालय

रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय

झाँसी 284003 उत्तर प्रदेश (भारत)

Website: www.rlbcau.ac.in

तिल की फसल के प्रमुख कीट एव उनकी रोकथाम के उपाय–

भारतवर्ष में उगाई जाने वाली तिल की फसल मुख्य रूप से पत्ती लपेटक या फली छेदक इल्ली, सूजन मक्खी, पत्ती का फूद्का, फूल खाने वाली इल्ली, फूल खाने वाली भृंग, लाल बालो वाली इल्ली, माहू और रस चूसने वाले कीड़े से प्रभावित होती है। बुदेलखंड क्षेत्र में पत्ती लपेटक या फलियों छेदक इल्ली, फूल खाने वाली कांटेदार इल्ली, लाल बालो वाली इल्ली, फूल खाने वाली भृंगस, और रस चूसने वाले कीड़ों का ही प्रकोप होता है।

पत्ती लपेटक फली छेदक इल्ली:

पहचान के लक्षण:

इसके अंडे चमकदार और पीले हरे रंग के होते है। इसकी इल्लियाँ लाल पीले रंग की, जो कि बाद में हरे रंग के साथ शरीर पर काले धब्बे बन जाते हैं। इसके शलभ या वयस्क आकार में छोटे और इनके पंखो के शिराओं पर गहरे भूरे रंगों के निशान होते हैं।

प्रभावित पौधे का शीर्ष भाग प्रभावित फलियाँ फली बेधक इल्ली व वयस्क

जीवन चक्र:

मादायें अगस्त के महीने में पौधों की पत्तियों के शिराओं पर लगभग 140 अंडे देती हैं। जिनसे 2 से 7 दिनों में छोटी इल्लियां बाहर निकालती हैं।

क्षतिग्रस्त फलियाँ फली बेधक से आंतरिक क्षति

इल्ली अपनी अंतिम अवस्था में मिट्टी में या कभी कभी पौधे पर, अपने चारो तरफ एक रेशे का कोष बनाती है। यह एक वर्ष में 14 पीढियों को जन्म देती है।

क्षति के लक्षण:

क्षति की शुरुआत अंकुरण से ही होने लगती है। इसकी इल्लियां पत्तियों को जाले में लपेटकर खाना शुरू करती है। इससे पौधा छोटी अवस्था में ही मर जाता है। इल्लियां, पौधे के वृद्धि कर रहे भाग को पत्तियों सहित लपेट कर खा जाती हैं। इससे पौधे की वृद्धि रूक जाती है और पौधे पर फूल आने की सम्भावना भी नहीं रहती। फूल अवस्था पर ये इल्लियाँ फूलो के साथ फलियों व उनमें छिद्र कर दानो को खाकर नष्ट कर देती हैं। इससे तिल की फसल को लगभग 90 प्रतिशत तक हानि हो सकती है।

कांटेदार इल्ली:

पहचान के लक्षण:

अंडे हरे सफेद रंग के होते हैं। शुरुआत में इल्ली पीले रंग की होती है। इल्ली के अंतिम शिरे पर एक कांटेनुमा संरचना होती है। इसके वयस्क शलभ आकार में बड़े, लाल भूरे रंग के, बड़े सिर वाले होते हैं। इनके पंखो पर गहरे भूरे और हरे रंग के धब्बो के साथ गहरे काले निशान व प्रत्येक पंख पर एक पीले रंग का धब्बा होता है। इसके वयस्क रात्रि में प्रकाश की तरफ आकर्षित होते हैं।

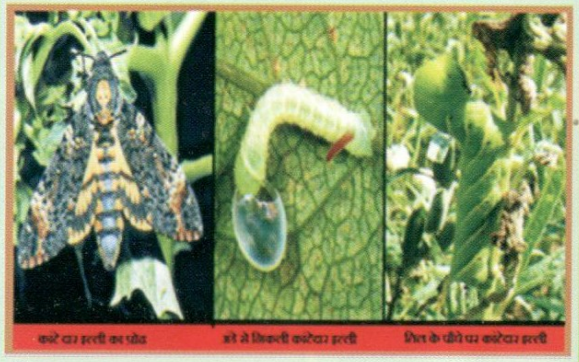

कांटेदार इल्ली का प्रौढ़ अंडे से निकली कांटेदार इल्ली तिल के पौधे पर कांटेदार इल्ली

जीवन चक्र:

मादायें पत्तियों के नीचे अलग–अलग अंडे देती हैं। जिनसे 2 से 5 दिनों में इल्लियां बाहर आती हैं। इल्ली 60 से 90 दिनों के बाद मिट्टी में 15 सेंटीमीटर गहराई पर कोष अवस्था में चली जाती है। गर्मी के मौसम में कोष अवस्था 15 से 21 दिनों की होती है, जबकि सर्दी में 7 माह की हो सकती है। यह कीट एक वर्ष में 2 से 3 पीढियों को पैदा करता है।

क्षति के लक्षण:

इसकी इल्लियां पौधे के ऊपर पत्तियों और फूलों को खाती है लेकिन ये फूलों को अधिक खाना पसंद करती है। एक इल्ली जिस भी पौधे पर चढ़ती है तो उसके सारे फूलों को चट कर जाती है। इसकी अत्यधिक क्षति होने पर प्रभावित पौधे बिना पत्तियों और फूलों के दिखाई देते हैं।

अंतिम अवस्था पर कांटेदार इल्ली फूलों को खाती कांटेदार इल्ली कांटेदार इल्ली की कोष अवस्था

लाल बालो वाली इल्ली:

पहचान के लक्षण:

इल्लियों का शरीर छोटे लाल रंग के बालों से ढंका होता है। इनके वयस्क मध्यम आकार के जिनका शरीर लाल रंग का होता है। वयस्क के पहले जोड़ी पंखो पर लाल भूरे रंग के धब्बों के साथ, काले रंग के निशान भी होते हैं।

जीवन चक्र:

इसकी मादायें समूह में और पत्तियों के नीचे अंडे देती हैं। अंडे पीले भूरे रंग के और इनसे 5 से 10 दिनों में छोटी इल्लियां बाहर आती है। ये इल्लियां पहले 1 से 2 दिनों तक समूह में रहकर नुकसान करती हैं और फिर अलग हो जाती हैं। ये 40 से 50 दिनों के बाद कोष अवस्था के लिए मिट्टी में चली जाती हैं।

लाल बालो वाली इल्ली का प्रौढ़ अवस्था समूह में दिये गये अंडे अंडे से बाहर आती छोटी इल्लियां समूह में पत्ती पर खाती इल्लियां